विचार बिन्दु

महान व्यक्ति महत्वाकांक्षा के प्रेम से बहुत अधिक आकर्षित होते हैं। –प्रेमचंद

डिजिटल समय में पढ़ने की पुरानी अवधारणा को गम्भीर चुनौती

जब चवन्नी क्लास में सिनेमा देखने जाने वाली आबादी के लिए सी ठोड फिल्में बनती थीं; जब किशोर स्कूलों से भाग कर फिल्में देखते थे; जब बुधवार की रात आठ बजे लोग घरों में और बाज़ार में दुकानों पर रेडियो सीलोन पर अमीन सयानी का बिनाका गीतमाला प्रोग्राम सुनने के लिए वैसे ही जमा होते थे जैसे किसी धार्मिक कथा में; जब लोग चूड़ीबाजे में चाबी भर कर उस पर रिकॉर्ड चलाते और तीन मिनट का गाना सुन कर निसार हो जाते थे; जब पंप से हवा भर कर तथा पिन से उसका नोज़ल साफ कर रसोई में स्टोव जलाते थे, तभी वह वक़्त भी था जब जासूसी कहानियां तथा रोमांस वाले उपन्यास खूब पढे जाते थे। भले ही इनका पढ़ना घरों में त्याज्य था। बड़ों की निगाह बचा कर ही पढ़ना पड़ता था। हालांकि घर के बड़े भी सफर में समय बिताने के लिए ऐसे उपन्यास खरीद कर गटक लेते थे। इसीलिए ऐसे उपन्यास अधिकतर रेलवे स्टेशनों और बसों के अड्डों पर लगी किताबों पर ही सजे मिलते थे। किशोर, पढ़ाई की किताबों में छुपा कर ऐसी कहानियों, उपन्यासों की किताबें और मेग्ज़ीनें पढ़ते थे। उस साहित्य को लुगदी साहित्य माना जाता था जो कम दाम पर बेचने के लिए शीघ्र पीले पड़ जाने वाले सस्ते अखबारी कागज पर छापा जाता था। आज की पीढ़ी को यह जान कर हैरानी हो सकती है कि यह साहित्य किताबों की दुकानों तथा विशेष लाइब्रेरियों से प्रतिदिन के हिसाब से किराये पर लाकर भी पढ़ा जाता था। इसी लुगदी साहित्य ने पिछली सदी के पांचवें दशक की पीढ़ी में पढ़ने की लत डाली जो उन्हें क्लासिक पढ़ने तक आगे ले जा सकी। उसी पीढ़ी ने घरेलू लाइब्रेरी योजना के सदस्य बन कर हर माह दस पॉकेट बुक्स भी मंगवाई और पढ़ी और उसके जरिए भारतीय और विश्व साहित्य और उनके महान लेखकों से पहला परिचय पाया। इस प्रकार उस पीढ़ी को पढ़ने की जो लत लगी वह ताउम्र उसके साथ रही। कहा भी जाता है कि किशोर वय में जो चीज सीख ली जाती है वह उम्र भर साथ नहीं छोड़ती। लेकिन यह भी सच है कि विद्यार्थियों में पढ़ने की लत हमारी संस्थागत शिक्षा व्यवस्था नहीं डाल सकी और आज हम ऐसे मुकाम पर अपने को पाते हैं जब हर तरफ कहा जा रहा है कि किताबों को अब कौन पढ़ता है? अब तो सभी अपने स्मार्ट फ़ोनों में आंखें गड़ाए रहते हैं। किन्तु दूसरी तरफ हम अपने आसपास तो यही देखते हैं कि धड़ाधड़ किताबें छप रही हैं। इतने नए-नए लेखक और कवि सामने आ रहे हैं, भले ही अनेक रचनाकार अपने खुद के पैसों से अपनी किताबें छपवा रहे हों। लोग धुआंधार लिख रहे हैं और राजकोष से वित्त पोषित अकादमियां उन्हें ढेर सारे इनाम ही नहीं दे रही बल्कि उनको प्रकाशन सहयोग भी दे रहीं हैं। ऐसे में आज के डिजिटल समय में यह पड़ताल जरूरी भी है कि सच में किताबें अब कौन पढ़ रहा है।

किताब उस मुद्रण युग की देन है जो ज्ञान के मौखिक प्रसारण और डिजिटल युग के बीच का काल है। यह काल पश्चिमी जर्मन के शहर मैन्ज़ से शुरू होता है, जहां गुटेनबर्ग ने 1455 में अपना पहला छापाखाना स्थापित किया। गुटेनबर्ग के नवाचार के कारण ही पुस्तकों का छप कर पाठकों के हाथों में पहुंचना संभव हुआ और प्रकाशन व्यवसाय का विकास हो सका। बहुत से अध्येता तो यह भी मानते हैं कि प्रिंटिंग प्रेस के जरिए ही संस्कृति, धर्म और ज्ञान में बदलाव आ सके और आगे बढ़ा जा सका। यह भी माना जा रहा है कि डिजिटल के अनुसरण में आगे और भी क्रांतियां होंगी जो मुद्रण की शुरुआत के बाद हुई धार्मिक और सामाजिक उथल-पुथल को प्रतिध्वनित करेंगी।ऐसा मानने वालों को लगता है कि राष्ट्र और राज्य के विचार को इस नई प्रौद्योगिकी से ही चुनौती मिलेगी। इससे पुराने सामाजिक मानदंड भी बदलेंगे। वे कहते हैं कि पहचान की राजनीति जैसी ऑनलाइन बहसों को जो लोग खारिज करेंगे वे नए ज़माने को समझने का अवसर खो देंगे। इस पड़ताल में एक चीज स्पष्ट नज़र आती है कि छपाई के इतिहास पर तो अनगिनत किताबें लिखी गई हैं, किन्तु पढ़ने के इतिहास पर बहुत कम किताबें हैं। हम कैसे पढ़ते हैं, इस विज्ञान को समझने की ओर ध्यान कम ही गया है। उन्नीसवीं सदी के मध्य में मुद्रण का बहुत बड़ा विस्तार हुआ। समाचार पत्र, पत्रिकाएं, पोस्टर, बिल बोर्ड और सस्ते उपन्यास जैसा इतना सामने आया कि दार्शनिक जॉन स्टुअर्ट मिल ने अपने समय को 'पढ़ने का युग' कहा। लेकिन उन्हें इस बात की भी चिंता थी कि पाठक के सामने जिस गति और मात्रा में साहित्यिक भोज परोसा जाएगा तो क्या वह कुछ ले भी पाएगा? पश्चिम में वैज्ञानिक प्रयोग करके यह समझने की कोशिश करते रहे हैं कि वास्तव में क्या होता है जब लोग पढ़ते हैं? इन प्रयोगों के मूल में यह विचार रहा कि पढ़ना कोई निष्क्रिय कार्य नहीं है। वह एक सक्रिय काम है। पढ़ने की वैज्ञानिक जांच करने वालों में एक चार्ल्स हब्बार्ड जुड हुए हैं जिन्होंने पढ़ते समय आंखों की गतिविधियों का अध्ययन करने के लिए उपकरण विकसित किया। इनसे भी अधिक महत्वपूर्ण एडमंड बर्क ह्यूई थे, जिनकी कृति 'द साइकोलॉजी एंड पेडागॉजी ऑफ रीडिंग' ने 1908 में क्रांति ला दी। जब हम पढ़ते हैं तो हम क्या करते होते हैं, की समझ पर उन्होंने पहली बार प्रकाश डाला। 'टैचिस्टोस्कोप' का उपयोग करते हुए उन्होंने पाया कि शब्दों को अनुभव से पहचाना जाता है। इस प्रकार, पढ़ना केवल दृष्टि का मामला नहीं है, बल्कि वह याद किए गए, पूर्वानुमानित और अनुमानित अर्थों का मामला भी होता है। उनकी इस अवधारणा ने इस विचार को प्रोत्साहित किया कि पढ़ने को सोचने के रूप में सिखाया जाना चाहिए। इसी प्रकार 1940 के दशक में, एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक, सैमुअल रेनशॉ ने विमानों की तेजी से पहचान में सुधार करने की कोशिश के अपने युद्धकालीन अनुभव का उपयोग करते हुए हुए 'स्पीड रीडिंग' का ज्ञान विकसित किया जिसने 20वीं सदी में, सार्वजनिक नीतियों को प्रभावित करने में मदद की क्योंकि तब तक लोकतंत्र के विकास को सुनिश्चित करने में साक्षरता और पढ़ने का महत्व समझा जा चुका था। इस प्रकार स्कूलों में पढ़ना सिखाने का दृष्टिकोण, और सार्वजनिक पुस्तकालयों द्वारा निभाई गई भूमिका दुनिया भर में आबादी के बड़े हिस्से को छपी हुई चीजें पढ़ा कर ही लोकतांत्रिक समाज को जोड़ने में महत्वपूर्ण बनी।

> **अनेक पाठक अब कागज की बंधी किताब को छोड़ कर जब 'किंडल' (डिजिटल किताब) की राह पर भी हो लिए हैं जिसे मशीन बोल कर सुना भी सकती है। फिर भी ऐसे लोग अब तक बचे हुए हैं जो भौतिक रूप में किताबों को पसंद करते हैं। किताबों की गंध, उनका अनुभव, पढ़ने का संवेदी अनुभव उन्हें सुकून देता है। वे सीने पर किताब रखे सो भी जाते है। ऐसे लोग भी हैं जो किताब खरीदना एक नेक काम मानते हैं।**

एक अध्येता जिसका नई समझ पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा वह है मार्शल मैक्लुहान। उसके 'द गुटेनबर्ग गैलेक्सी' (1962) ने मीडिया युग के 'नैतिक आतंक' के बारे में लोगों के विचारों को गहराई तक प्रभावित किया। उसका तर्क था कि समाज को यह समझने में देर हो गई है कि 'माध्यम ही संदेश है'। मैकलुहान ने यह भी कहा कि मुद्रित पृष्ठ 'मन की अनोखी आदतों का निर्माता' होता है। इस अवधारणा को आगे बढ़ाते हुए अनुभूति की मानसिक प्रक्रियाओं पर स्क्रीन-रीडिंग के प्रभाव में रुचि रखने वाले न्यूरोवैज्ञानिकों ने हाल के दिनों में वर्तमान तकनीकी रीडिंग के प्रभावों के बारे में चिंता जताई है। अमरीका के नेशनल असेसमेंट ऑफ एजुकेशनल प्रोग्रेस के अनुसार, 2017 और 2019 के बीच 17 अमेरिकी राज्यों में साक्षरता में गिरावट देखी गई जिसके लिए पढ़ने में आए बदलाव को जिम्मेवार माना जा रहा है। किन्तु क्या यूट्यूब और टिकटॉक के युग में पढ़ना अब भी एक जरूरी कौशल के रूप में देखा जाना चाहिए जिसमें सभी नागरिकों को दक्ष हों? अध्येताओं का कहना है कि पढ़ने के कौशल, और जो पढ़ा जाता है उसकी समझ, को सभी के लिए, विशेषकर युवाओं के लिए कैसे सुलभ बना सकते हैं इस पर काम करना जरूरी है क्योंकि इसका उनके जीवन की संभावनाओं पर गंभीर प्रभाव पड़ने वाला है। पढ़ने और लिखने दोनों के क्षेत्र में अब चैट जीपीटी प्रवेश कर चुका है जिसके लिए तो यहां तक कहा जाने लगा है कि इससे हमें खुद पाठों (टेक्स्ट) को पढ़ने और समझने की ज़रूरत ही नहीं रहेगी। हमारा यह बोझ कंप्यूटर का 'एल्गोरिद्म' उठा लेगा। इस प्रकार मशीनी बुद्धि 'एआई' द्वारा सक्षम किए गए अत्यधिक डेटाफिकेशन के कारण हमें पारंपरिक पढ़ने को बड़ी चुनौती मिलती दिख रही है। हालांकि अतीत में किताबों का वृहद उत्पादन और पढ़ने का अभ्यास जबरदस्त तरीके से प्रभावशाली रहा है, मगर अब आगे क्या होगा जब एल्गोरिद्म मनुष्यों की तुलना में अधिक रीडिंग करने लगेगा? उससे समाज कैसे बदल जाएगा उसकी चिंता बहुतों को सता रही है। पब्लिशर्स वीकली ने भी हाल ही में बताया कि इस साल की पहली छमाही के लिए किताबों की बिक्री एक बार फिर कम हो गई है। किताबों की बिक्री में गिरावट कोविड महामारी के बाद से ही जारी है। अनेक पाठक अब कागज की बंधी किताब को छोड़ कर जब 'किंडल' (डिजिटल किताब) की राह पर भी हो लिए हैं जिसे मशीन बोल कर सुना भी सकती है। फिर भी ऐसे लोग अब तक बचे हुए हैं जो भौतिक रूप में किताबों को पसंद करते हैं। किताबों की गंध, उनका अनुभव, पढ़ने का संवेदी अनुभव उन्हें सुकून देता है। वे सीने पर किताब रखे सो भी जाते है। ऐसे लोग भी हैं जो किताब खरीदना एक नेक काम मानते हैं। ऐसे ही नेक लोग किताबें कौन पढ़ता है के झंझावात में नांव को थामे रखने की अपनी भूमिका निभा रहे हैं। यह भरोसा देता है कि किताबें रहेंगी और हाथ में लेकर उन्हें पढ़ने वाले भी रहेंगे।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

सेहत से अर्थव्यवस्था तक, ऐसे किस्मत बदलेगा ''मोटा अनाज''

अविनाश जोशी

बदलती जीवन शैली एवम स्वास्थ के प्रति जागरूक नई पीढ़ी अपनी पुरातन परम्पराओं का सम्मान करे एवम स्वस्थ विश्व के निर्माण में सहायक भूमिका अदा करे इस मुहिम को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 2023 को ''मोटे अनाज का अन्तर्राष्ट्रीय वर्ष'' के रूप में घोषित किया है। वर्ष घोषित करने का प्रस्ताव भारत द्वारा प्रायोजित किया गया था। इस प्रस्ताव को सर्वसम्मति से और 72 देशों के समर्थन से अपनाया गया था। भारतीय पुरातन परम्पराओं के प्रति विश्व के देशों का इससे बड़ा सम्मान शायद और कुछ नही हो सकता। उदार चरित और वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांत वाले भारत के मोटा अनाज वर्ष के प्रस्ताव की महत्ता को समझते हुए संयुक्त राष्ट्र ने इसे स्वीकार किया और अब हम सभी भारतीयों का उत्तरदायित्व है कि हम अपने अपने स्तर पर इसे सफल बनाने के लिए प्रयास करें।

मोटा अनाज जो काफी समय से लोगों की थाली से गायब है। जिसका परिणाम ये है कि तमाम बीमारियां लोगों को घेर रहीं हैं। अब भारत सरकार मोटे अनाजों को फिर थाली में वापस लाने का प्रयास कर रही है। भारत के प्रस्ताव पर 72 देशों के समर्थन के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ ने साल 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष घोषित किया है। अब पूरी दुनिया में मोटे अनाजों से जोड़कर कई आयोजन किए जा रहे हैं। एक तरफ राज्य सरकारें किसानों को मोटे अनाज उगाने के लिए प्रेरित कर रही हैं तो वहीं लोगों को थाली तक इसे पहुंचाने के लिए भी जागरुक किया जा रहा है। वैसे तो दुनिया में मिलेट की 13 वैरायटी मौजूद है, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज वर्ष 2023 के लिए 8 अनाजों- बाजरा, रागी, कुटकी, संवा, ज्वार, कंगनी, चेना और कोदो को शामिल किया गया है। हमारा देश पूरे विश्व में मोटे अनाज के उत्पादन में पहले स्थान पर है और देश भर में मोटे अनाज के उत्पादन में राजस्थान सबसे ऊपर है। कभी मोटा अनाज गरीबों का भोजन हुआ करता था। समय और परिस्थितियां बदली तो मोटे अनाज की कीमत बढ़ गई। पूर्ण औषधीय के रूप में अब मोटा अनाज काम आने लगा है।

कोविड-19 के बाद भारत में मोटे अनाज के प्रयोग का महत्व और उपयोग में वृद्धि हुई है। महामारी ने खाद्य सुरक्षा और पोषण की अहमियत को और ज़ोर दिया है, और इसके चलते मोटे अनाजों का सेवन और उत्पादन महत्वपूर्ण हो गया है। कोविड-19 महामारी के समय, खेती और अनाज के उत्पादन में कई संगठनों ने नए तकनीकों और विधियों का उपयोग किया है ताकि किसानों को अधिक उत्पादकता की विधियों से लाभ मिल सके। विशेषकर सुखे क्षेत्रों में, अनाज की खेती के लिए नए जलवायु-संरक्षणीय तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है जिससे उन्नत खेती एवम बेहतर फसल मिल सके। कोविड के बाद किसानों को खेती के लिए बेहतर बीज और खाद्य पदार्थों की पहचान करने में भी ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है ताकि पौष्टिकता और उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार हो सके।

अच्छा, मोटा अनाज पुरानी परंपरा है जो हमारे देश में भोजन की एक महत्वपूर्ण विधा है। यह परंपरा देश भर में अपने विविधता और स्वाद के लिए प्रसिद्ध है। इनका उपयोग भोजन बनाने के साथ-साथ आपसी रिश्तों को मजबूत करने में भी होता है। मोटे अनाज की पुरानी परंपरा भारतीय खेती और भोजन संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें गेहूं, चावल, जौ, मक्का, बाजरा और रागी जैसे अनाज शामिल होते हैं। इन सब की खेती भारत में की जाती हैं एवं यह सब मिलेट्स पौष्टिक भोजन का मुख्य स्त्रोत हैं। इन्हें दालों, सब्जियों, और दूध उत्पादों के साथ सेवन किया जाता है, जो संतुलित आहार के लिए महत्वपूर्ण होता है। भारतीयों के लिए अनाजों का सेवन एक संपूर्ण आहार सिद्धांत का महत्वपूर्ण अंग है, यह पुरातन समय से हमारे जीवन का अंग रहा है।

धार्मिक ग्रंथों एवम पौराणिक कथाओं में मोटे अनाज का उल्लेख काफी सामान्य है, खासकर हिंदू धर्म के ग्रंथों में। वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, उपनिषद, भगवद गीता, विष्णु पुराण, वायु पुराण, भागवत पुराण, आदि ग्रंथों में मोटे अनाज जैसे- गेहूं, चावल, जौ, मक्का, बाजरा का सम्बन्ध भगवान और धर्म से किया गया है। इन ग्रंथों में खेती, खाद्य, पौष्टिकता, भोजन, यज्ञों, व्रतों, और संस्कृति से सम्बंधित विभिन्न विषयों के संबंध में उल्लेख किया गया है। इन धार्मिक ग्रंथों में अनाजों का उचित उपयोग और सेवन धार्मिक और सामाजिक मानदंडों के अनुसार करने के विधान का उल्लेख है।

भारतीय परम्पराओं में मिलेट्स का प्रयोग मुख्य रूप से अन्नप्राशन संस्कार, सगाई, विवाह एवम धार्मिक उत्सवो में प्रचुर मात्रा में करने का विधान है अन्नप्राशन संस्कार में बच्चे को पहली बार अनाज खिलाने का विधान होता है, जिससे उसके आहार का आधार अनाज पर रखा जाता है। भारतीय विवाह समारोहों में भी मोटे अनाज का प्रयोग अहम है। विभिन्न धार्मिक उत्सवों में मोटे अनाज का प्रयोग भोजन में किया जाता है, लेकिन भारतीय संस्कृति में मोटे अनाज का प्रयोग बहुत सी और प्रथाओं में किया जाता है, जो विभिन्न रूपों में खासतौर से अवधारणा, समर्थन, और परंपराओं के आधार पर होता है।

बुवाई के समय मोटे अनाज का लोक गीतों में उल्लेख भारतीय संस्कृति का एक अहम हिस्सा है। मोटे अनाज का प्रचलन बढ़ने से जनसामान्य सहित किसानों को लाभ मिलने की बड़ी सम्भावना है एक ओर इससे कुपोषण की समस्या से निपटने का नया और सरल मार्ग मिलेगा वहीं दूसरी ओर इससे किसानों की आय दोगुनी होने का मार्ग भी प्रशस्त होगा। यही कारण है कि मोटा अनाज वर्ष में एक ओर किसानों को इन अनाजों की खेती करने के लिए जागरूक किया जाएगा और दूसरी ओर लोगों को मोटे अनाज के महत्व से अवगत कराया जाएगा जिससे इनकी खपत बढ़े और किसान इनकी खेती में रूचि दिखाएं। इसके अतिरिक्त मोटे अनाज की खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने इस वर्ष इसके समर्थन मूल्यों में भी वृद्धि कर दी है।

हरित क्रांति भारत में खेती के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन की एक घटना थी, जिसका अर्थ होता है 'हरा अनुदान' या 'हरित क्रांति'। यह अवधि 1960 और 1970 के दशक में भारत में विज्ञान और तकनीकी उन्नति के परिणामस्वरूप खेती में उत्पादन को बढ़ाने के लिए उन्नत तकनीकों और जलवायु विशेषताओं का प्रयोग करके हुई। हरित क्रांति के पहले, भारत में अनाज की उपज गुणवत्ता में कम थी, जिससे भूखमरी और खाद्य सुरक्षा की समस्या थी। इसके समाधान के लिए, विशेषज्ञों ने मोटे अनाज के उत्पादन को बढ़ाने के लिए नए तकनीकों का प्रयोग किया।

मोटा अनाज उपभोक्ता, उत्पादक व जलवायु तीनों के लिए अच्छा माना गया है। ये पौष्टिक होने के साथ कम पानी वाली सिंचाई से भी उगाए जा सकते हैं। विषेशज्ञों का मत है कि कुपोषण मुक्त और टिकाऊ भविष्य बनाने के लिये मोटे अनाज की अहम भूमिका होगी और इसके लिए देशों को मिलकर काम करने की आवश्यकता है। मोटे अनाज को प्रोत्साहन वर्तमान समय की मांग भी है क्योंकि यह अनाज आधुनिक जीवन शैली में बदलाव के कारण सामने आ रही कई बीमारियों व कुपोषण को रोकने में सक्षम है। इसके अलावा मोटे अनाज देश की खाद्य और पोषण सुरक्षा में बड़े पैमाने पर योगदान करते हैं। इन्हें न्यूट्री-सीरियल्स के रूप में जाना जाता है क्योंकि ये मानव शरीर के सामान्य कामकाज के लिए आवश्यक अधिकांश पोषक तत्व प्रदान करते हैं।

मोटे अनाज में कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स (जीआई) होता है और यह मधुमेह की रोकथाम से भी मददगार होता है। ये आयरन, जिंक और कैल्शियम जैसे खनिजों का अच्छा स्त्रोत हैं। मोटे अनाज वजन कम करने और उच्च रक्तचाप में मददगार होते हैं। इनका आम तौर पर फलियों के साथ सेवन किया जाता है, जो प्रोटीन युक्त होता है। भारत के शीर्ष पांच मोटा अनाज उत्पादक राज्य हैं – राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, गुजरात और मध्य प्रदेश। मोटा अनाज निर्यात का हिस्सा कुल उत्पादन का एक प्रतिशत है। अनुमान है कि 2025 तक मोटे अनाज का बाजार वर्तमान 9 बिलियन डॉलर बाजार मूल्य से बढ़कर 12 बिलियन डॉलर हो जाएगा।भारत जिन प्रमुख देशों को मोटे अनाज का निर्यात करता हैं, उनमें संयुक्त अरब अमीरात, नेपाल, सऊदी अरब, लीबिया, ओमान, मिस्त्र, ट्यूनीशिया, यमन, ब्रिटेन तथा अमेरिका हैं। भारत द्वारा निर्यात किए जाने वाले मोटे अनाजों में बाजरा, रागी, कनेरी, जवार और कुट्टू शामिल हैं। मोटे अनाज आयात करने वाले प्रमुख देश हैं – इंडोनेशिया, बेल्जियम, जापान, जर्मनी, मेक्सिको, इटली, अमेरिका, ब्रिटेन, ब्राजील और नीदरलैंड।

इस साल मोटे अन्न को प्रोत्साहित करने के लिए कई कार्यक्रम तय किए गए हैं। 140 से अधिक देशों में भारत के दूतावास 2023 के दौरान अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष के उत्सव, आयोजित करके प्रदर्शनी, सेमिनार, वार्ता, पैनल चर्चा के साथ-साथ स्थानीय वर्गो की भागीदारी, भोजन ब्लॉगर्स, खाद्य पदार्थों के आयातक और स्थानीय रेस्तरां आदि में भाग लेंगे। इसके अलावा बाजरा जी-20 बैठकों का भी एक अभिन्न हिस्सा है। इसके तहत प्रतिनिधियों को इसे चखने, किसानों से मिलने और स्टार्ट-अप के साथ संवादात्मक सत्रों के माध्यम से बाजरा को लेकर अनुभव प्रदान किया जाएगा। इस संकल्प का आशय मिलेट्स के स्वास्थ्यवर्धक होने और जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम की विपरीत परिस्थितियों में भी उनकी उपयुक्त पैदावार के बारे में जन जागरूकता को बढ़ाना है। भारत में इसकी लोकप्रियता को बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसान दिवस से ठीक एक दिन पहले संसद में मोटे अनाज से बने व्यंजनों की दावत आयोजित की।

भारत सरकार ने मोटे अनाज के प्रति बढ़ती जागरूकता के मद्दे नज़र मोटे अनाज को श्री अन्न नाम दिया है। अन्न एवम अनाज के प्रति आदर एवम सम्मान का इससे बड़ा उदाहरण विश्व के किसी भी देश में संभव नही है। पुराने वक्त में भारतीय लोगों का भोजन रहे मोटा अनाज एक बार फिर सुर्खियों में है एवम उच्च जीवन शैली तथा आधुनिकता के हिमायती वर्गो में फिर अपनी धाक जमाने को तत्पर है। लौट रहा मोटे अनाज का पुराना दौर व अहमियत पता चली तो बड़ी नामी-गिरामी कंपनियों ने शुरू की मार्केटिंग एवं अपने उत्पादों की मुख्य श्रेणी में मोटे अनाज को स्थान देने लगी है। 'श्री अन्न' के नाम को विज्ञापित कर आम जन की जुबान पे लाने का काम देश की जागरूक संस्थाएं एवम स्थानीय सरकारों को करना चाहिए जिससे इस अदभुत अन्न का उपयोग आम जन जीवन का एक हिस्सा बन सके।

जाने कितने थे अन्न यहाँ?
एक-दूजे से प्रसन्न यहाँ।
जब आया दौर सफेदी का, हो गए मगर सब खिन्न यहाँ।

– अविनाश जोशी,
स्वंतत्र पत्रकार एवं लेखक

शहरी ओलम्पिक खेलकूद प्रतियोगिताओं से पंजीकृत खिलाड़ी नदारद

वॉलीबाल प्रतियोगिता में भाग लेती बालिकाएं।

- **वहीं ग्रामीण ओलम्पिक खेलों में ग्रामीणों मे खेलों के प्रति उत्साह**
- **शहरी ओलम्पिक खेल मैदानों मे खेल देखने के लिये दर्शक तक नहीं पहुंच रहे हैं**

बीदासर, (निसं)। कस्बे के राजेन्द्र सुरेन्द्र चौरड़िया स्टेडियम में नगर पालिका के सौजन्य से चल रहे राजीव गांधी शहरी ओलम्पिक खेलकूद प्रतियोगिताओं के चौथे दिन विभिन्न खेलों में पंजीकृत खिलाड़ी नदारद रहने से खेल नहीं खेले गये। शहरी ओलम्पिक खेलों के प्रति खिलाड़ियों का रूझान कम तो वहीं ग्रामीण ओलम्पिक खेलों में ग्रामीणों मे खेलों के प्रति उत्साह होने के कारण नौजवान से लेकर बुजुर्ग तक उत्साह से बढ़चढ़ कर खेलों मे भाग ले रहे हैं। वहीं शहरी ओलम्पिक खेल मैदानों मे खेल देखने के लिये दर्शक तक नहीं पहुंच रहे है। खेल मैदानों मे सन्नाटा पसरा नजर आ रहा है।

नोडल ऑफिसर डॉ. सरदार सिंह रेवाड़ ने बताया कि कस्बे के विभिन्न खेल मैदानों पर खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। महिला वर्ग खो-खो में विपक्ष की टीम उपस्थित नही होने के कारण टीम कैप्टन तानिया की टीम संख्या 103062 को विजेता घोषित किया गया। इसी प्रकार कबड्डी महिला वर्ग में विपक्ष की टीम खेल मैदान में उपस्थित नहीं होने के कारण टीम कैप्टन धर्मा चौहान की टीम को विजेता घोषित किया गया। महिला टेनिस बॉल क्रिकेट में विपक्ष की टीम उपस्थित नहीं होने के कारण टीम कैप्टन योगिता की टीम को विजेता घोषित किया गया।

शारीरिक शिक्षक पवन कुमार जांगिड़ ने बताया कि पुरूष वर्ग टेनिस बॉल क्रिकेट में टीम कैप्टन राजेश गुसाईवाल की टीम विजेता रही। वहीं बांठिया स्कूल के परिसर में आयोजित वॉलीबॉल मैच में पुरुष वर्ग में फाइनल मुकाबला कैप्टन बनवारी लाल और मोहम्मद आदिल की टीम के बीच हुआ। इस रोचक मुकाबले में कैप्टन मोहम्मद आदिल की टीम फाइनल में विजेता रही।

नगर परिषद ने सीवर का गंदा पानी खेतों में छोड़ा

श्रीगंगानगर, (निसं)। चक 6 जैड ए में रह रहे लोगों व किसानों ने नगर परिषद के खिलाफ जमकर आक्रोश व्यक्त किया। वजह है परिषद द्वारा यहां कचरा प्वाइंट के पास खेतों में सीवर का गंदा पानी छोड़ दिया गया है। यह स्थिति बीते एक सप्ताह से है। स्थानीय बृजलाल माली ने बताया कि उन्होंने साढ़े 4 बीघा खेत में सब्जी लगा रखी थी। वहीं पास ही पशुओं के लिए चारा लगाया गया है। नगर परिषद द्वारा बड़ी मात्रा में सिवर का गंदा पानी खेतों में छोड़ दिया गया। इस वजह सारी सब्जियां व चारा खराब हो गया है।

- **फसलें चौपट हो रही है, लोगों व किसानों ने नगर परिषद के खिलाफ जमकर आक्रोश व्यक्त किया**
- **पानी की वजह से खेतों में घुस पाना तक मुश्किल हो गया है। इस संबंध में अनेक बार नगर परिषद के अधिकारियों को अवगत कराते हुए परेशानी बताई**
- **किसानों का कहना है कि इस संबंध में कलेक्टर से मिलकर परेशानी से अवगत कराया जाएगा**

पानी की वजह से खेतों में घुस पाना तक मुश्किल हो गया है। इस संबंध में अनेक बार नगर परिषद के अधिकारियों को अवगत कराते हुए परेशानी बताई, लेकिन समस्या का समाधान आज तक नहीं हुआ। इन हालातों में कैसे किसान परिवार का पालन-पोषण कर सकेंगे। किसानों का कहना है कि इस संबंध में मंगलवार कलेक्टर से मिलकर परेशानी से अवगत कराया जाएगा। वहीं परिषद द्वारा फसलें खराब कर देने का मुआवजा भी मांगा जाएगा। साथ ही दोषी अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग की जाएगी। गंदे पानी की वजह से फसलें चौपट होने लगी है। हाईकोर्ट में नगर परिषद के खिलाफ याचिकाकर्ता राजकुमार सैनी का कहना है कि नगर परिषद हर स्तर पर स्थानीय लोगों व किसानों को परेशान करने में लगी है। करीब 10 साल हड्डारोड़ी की वजह से परेशानी भुगती, हाईकोर्ट के आदेश पर बंद करवाई तो शहर का कचरा डालना शुरू कर दिया। न्यायालय में मामला विचाराधीन है।

अब परिषद द्वारा शहर के गड्ढों का गंदा पानी खेतों में छोड़ा जा रहा है। सिवर वेस्ट की वजह से यहां 24 घंटे भयंकर दुर्गंध आती रहती है। सैनी सहित अन्य का कहना है कि नगर परिषद द्वारा हाल ही पुरानी आबादी के वार्डों को राहत के नाम पर गड्ढों से लिंक चैनल को जोड़कर पानी पहुंचाने के दावे किए गए। ऐसे में इलाके के किसानों को भी खुशी हुई, लेकिन जैसे ही परिषद द्वारा यहां खेतों में यह गंदा पानी छोड़ा गया, इसके बाद से किसानों में आक्रोश है। परिषद द्वारा गंदा पानी बंद नहीं किया गया तो लोग धरना प्रदर्शन करेंगे, शहर से कचरा प्वाइंट पर भेजी जा रही ट्रेक्टर-ट्रालियां व टेंपो के वापस लौटाया जाएगा। ऐसे में सवाल यह उठता है कि खेतों में ही गंदा पानी छोड़ना था तो करोड़ों रुपए लिंक चैनल के नाम पर क्यों खर्चे किए जा रहे हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 9 अगस्त, 2023

द्वि. सावन मास (अधिक), कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2080, कृत्तिका नक्षत्र रात्रि 2:29 तक, वृद्धि योग दिन 3:40 तक, तैतिल करण सांय 4:02 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 7:43 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मेष, चन्द्रमा-मेष, मंगल-सिंह, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सम्पूर्ण दिन-रात है। ज्वालामुखी योग रात्रि 2:29 से रात्रि 4:12 तक है। कुमार योग रात्रि 4:12 से सूर्योदय तक है। आज विश्व आदिवासी दिवस है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:16 तक, शुभ 10:54 से 12:31 तक, चर 3:44 से 5:27 तक, लाभ 5:27 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:59, सूर्यास्त 7:06

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृष

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति ठीक रहेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

मिथुन

आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक अनावश्यक वृद्धि होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है।

तुला

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

वृश्चिक

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु

विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कुंभ

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। सुख-शांति बनी रहेगी। अतिथियों के आगमन से परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

मीन

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।